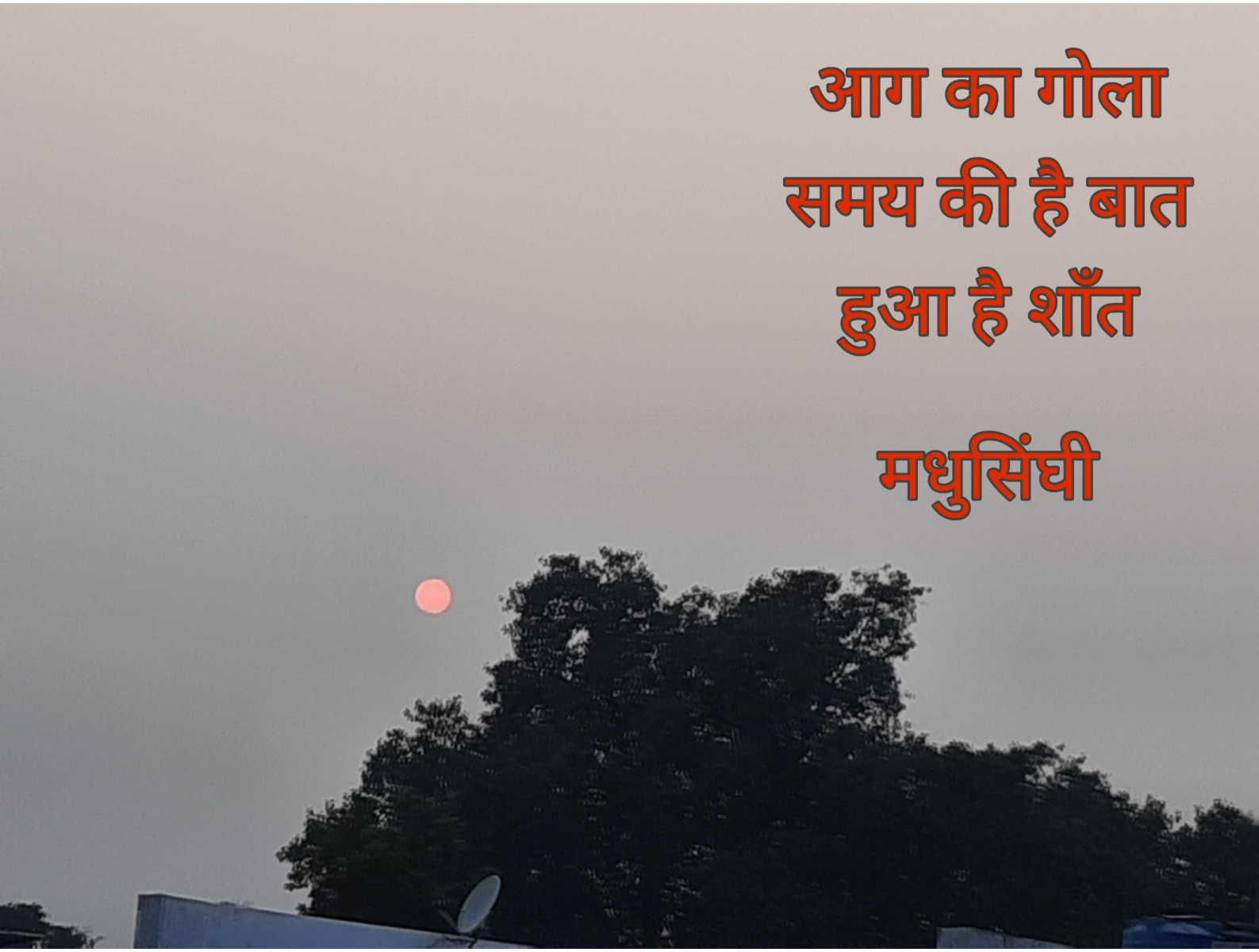
आग का गोला
समय की है बात
हुआ है शाँत
मधुसिंघी

गुलाबी ठंड
दुशाला भी गुलाबी
धरा चहकी
मधुसिंघी

जीवन नैय्या
लग जायेगी पार
रखना दम
मधुसिंघी

देख के अक्स
सागर में शज़र
है अचंभित
मधुसिंघी

कर लेते हैं
बैठ कर दो बातें
मिला है वक्त
मधुसिंघी

जहाँ भी देखूँ
प्रकृति तेरा रूप
लगे अनूप
मधुसिंघी

जन जीवन
सरल व तरल
पानी सा मन

मिल जाएगा
एक दिन मिट्टी में
मिट्टी का तन

गगन छूता
इत-उत डोलता
नाचता मन

क्षितिज पार
जाना है एक दिन
आत्मा विलीन

भरी उड़ान
ये उड़न खटोला
छूता आकाश
मधुसिंघी

काँस का फूल
देख कर बोराऊँ
खेलूँ या खाऊँ
मधुसिंघी

रीझे है मन
वन में है अकेले
पिया मिलन
मधु सिंघी

मन हर्षित
बरसों बाद खिला
बाँस का फूल
मधुसिंघी

भोजन करें
एकाग्रता के साथ
स्वास्थ्य में लाभ
मधुसिंघी

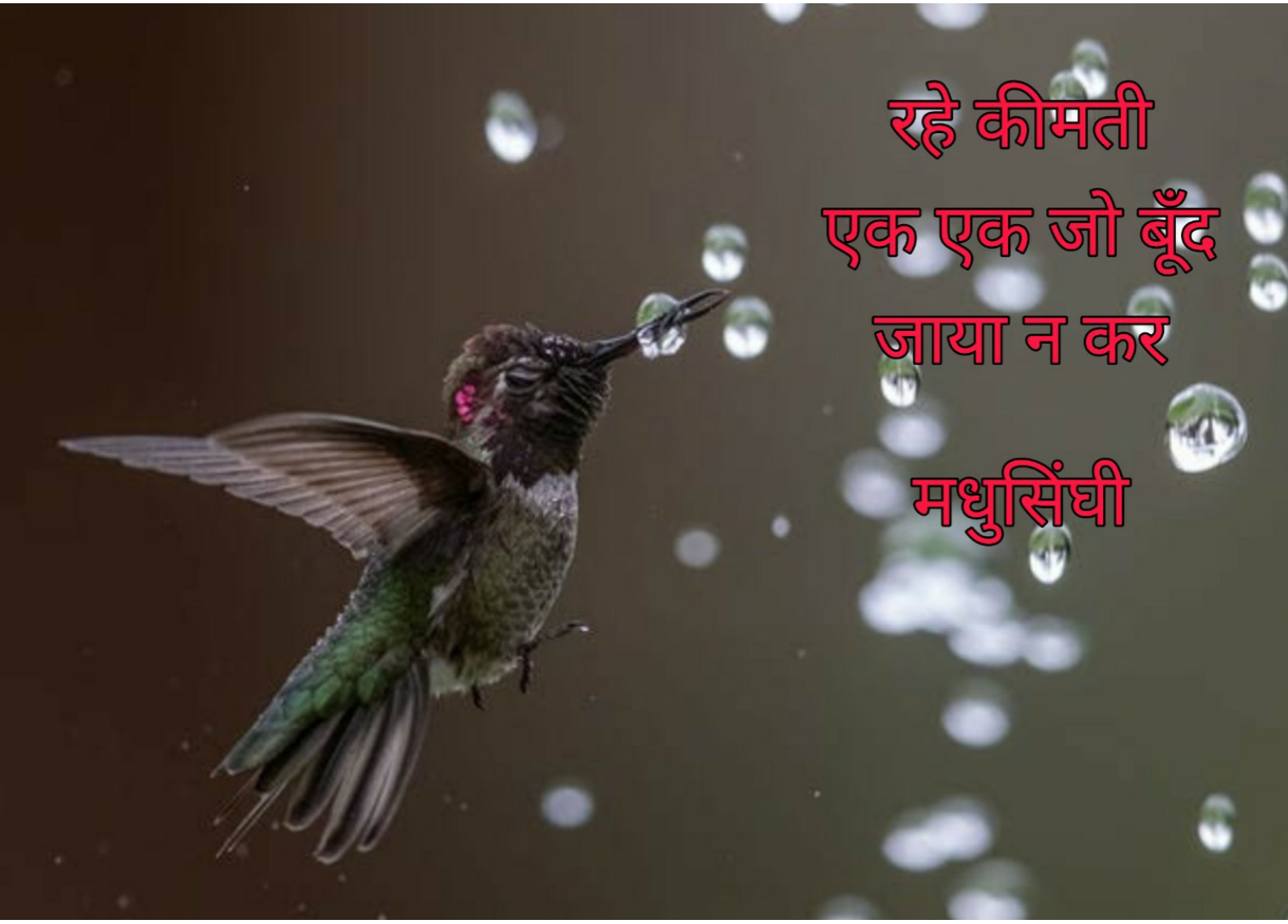
रहे कीमती
एक एक जो बूँद
जाया न कर
मधुसिंघी

ऊँची उड़ान
प्रकृति फरमान
बढ़े हौंसला
मधुसिंघी

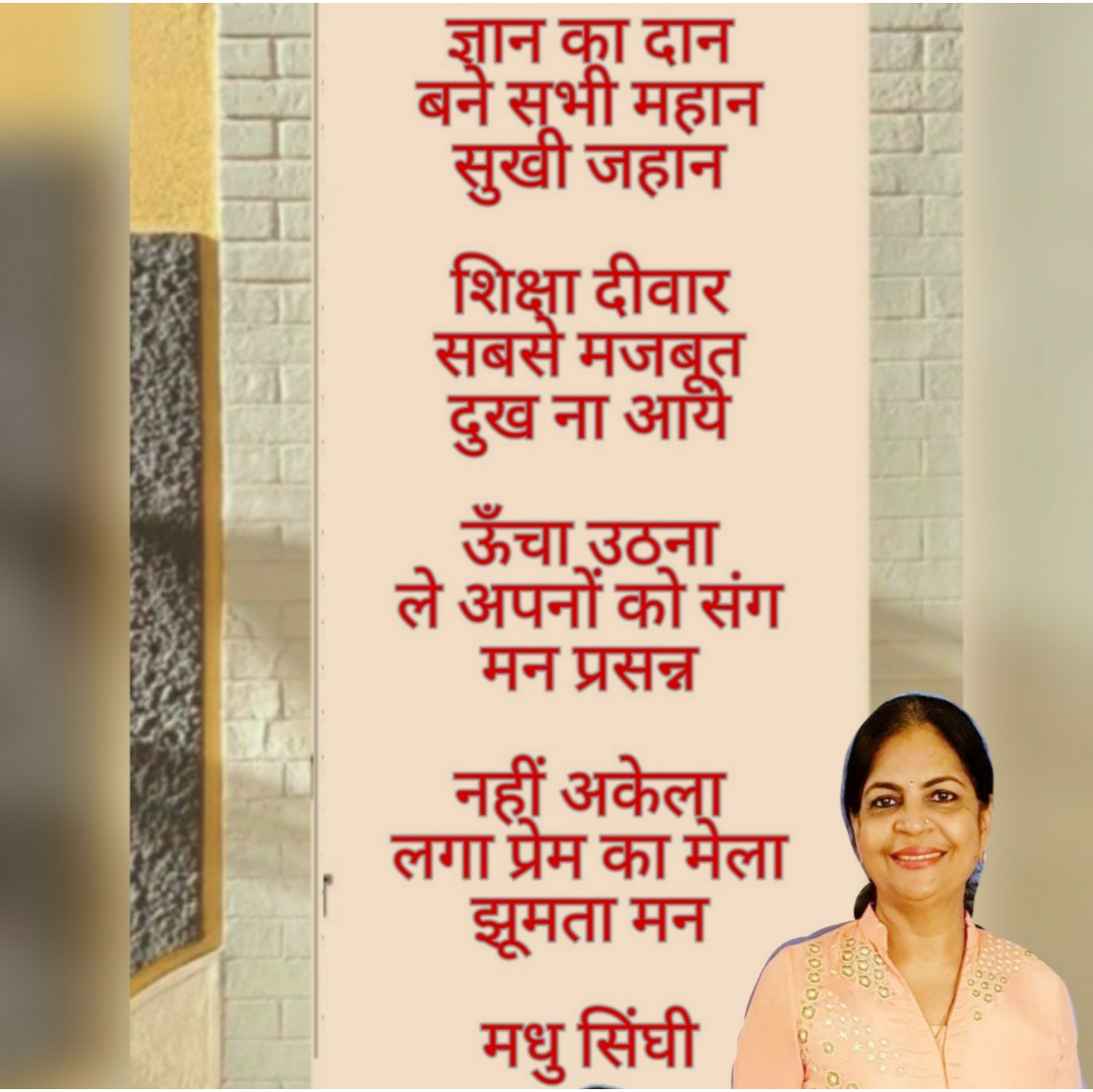

ज्ञान का दान
बने सभी महान
सुखी जहान

शिक्षा दीवार
सबसे मजबूत
दुख ना आये

ऊँचा उठना
ले अपनों को संग
मन प्रसन्न

नहीं अकेला
लगा प्रेम का मेला
झूमता मन

मधु सिंघी

ईद का चाँद
करता फरियाद
सुनना बात

हो नेक कर्म
बचे मानव धर्म
सुनना बात

सम दृष्टि हो
ना भेद भाव रहे
सुनना बात

शीतल बन
रहो शांत भाव से
सुनना बात

मधु सिंघी